मुहम्मद सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम संपूर्ण मानव जाति के उद्धार कर्ता हिन्दु धर्मग्रंथो के अनुसार

अल्लाह के रसुल हज़रत मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम को संपूर्ण मानव जाति के लिए अल्लाह ने अपना नबी (दूत) बनाकर भेजा इसके ज़र्रा (कण) बराबर भी शक नहीं है, क्योकि हम ये देखते है की मानव जाति मे बड़े भयंकर वैचारिक मतभेद पाये जाते है, और इसलिए अनेक धर्म और इसके मानने वाले संसार भर मे अपने अपने धर्म का गुणगान करते है और उसे सबसे श्रेष्ठ साबित करने की कोशिश करते रहते है जिससे धार्मिक मतभेद भी उत्पन्न होते है और कभी कभी तो ये मानव समाज के लिए बड़े भयंकर साबित होते है । इसलिए अल्लाह (ईश्वर) की ये कुदरती (प्राकृतिक) व्यवस्था है कि वह मानव समाज के लिए समय समय पर अपने दूत या नबी मानव समाज के उद्धार के लिए भेजता रहा है इसी कड़ी मे उसने अपने सबसे प्यारे नबी (दूत) मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी सबसे आखिरी नबी बनाकर 9 रबीउल अव्वल 1 आमुल फील का दुसरा सोमवार 53 हिजरी पूर्व, यानि 21 अप्रैल 571 ईस्वी, यानि 12 वैसाख 628 विक्रमी संवत मे अरब प्रायद्वीप के मक्का शहर मे इस धरती पर अवतरित किया, और उनके ही द्वारा ये एलान करा दिया कि अब मानव जाति के लिए कयामत (प्रलय) तक और कोई नबी नही भेजा जायेगा ।

अब अगर ऐसा है तो ज़ाहिर है उस आखिरी नबी मे ऐसी विशेषताएं होना जरूरी है जिसमे मानव जाति के लिए कयामत तक रहनुमाई मौजूद हो । आईये देखते है ईश्वर के इस आखिरी नबी को ईश्वर ने किन विशेषताओं के साथ मानव जाति के उद्धार के लिए इस धरती पर भेजा ।

ये ईश्वरीय व्यवस्था ही है कि हर धर्म के पास अपनी एक या दो धार्मिक ग्रंथ होते है जिसे उस धर्म विशेष के नबी पर नाज़िल (अवतरित) किया जाता है, जिसमे उस धर्म के मौलिक ज्ञान और सभ्य जीवन गुजारने के लिए ईश्वरीय आदेश होते है । मगर हज़रत मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम चूंकि किसी धर्म विशेष के लिए नही भेजे गये इसलिए उन पर अवतरित कुरआन मे संपूर्ण मानव जाति के लिए प्रलय तक के लिए आदेश और सुझाव मौजूद है । मगर धार्मिक मतभेद की वजह से लोगों ने इसमे भी मतभेद किया और सिर्फ और सिर्फ अपने कम पढ़े लिखे विद्वानो के मतानुसार ही एक दुसरे से मतभेद करते रहे, अगर वो अपने धर्म ग्रंथो का बारीकी से अध्ययन करते तो वह अपने आप के लिए स्पष्ट आदेश पाते और मानव जाति के मतभेद कुछ हद तक कम हो जाते ।

इसी क्रम मे हम देखते है कि हज़रत मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए हिन्दु धर्म ग्रंथो मे क्या पेशनगोईयां (भविष्यवाणियां) मौजूद है :-

वेदो मे नराशंस

हिन्दु धर्म हमारे हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और बांग्लादेश का मशहूर और प्राचीन धर्म है । हिन्दुस्तान मे इसी धर्म को मानने वालो की संख्या अधिक है । लेकिन यह धर्म दुनिया के बाकी धर्मो से बहुत सी बातों मे भिन्न है । इस

धर्म के बारे मे यही मालूम नहीं कि इसका प्रथम आवाहक कौन है ? इसका पैगम्बर और नबी कौन है ? इसका आरंभ कब से हुआ और इसके मानने वालो को हिन्दू क्यों कहा जाता है ? बल्कि यह भी किसी हद तक संदिग्ध ही है कि इसकी असल और बुनियादी किताब कौन सी है और यह बात तो बड़ी पेचीदा है कि इसकी कोई स्पष्ट और पूर्ण परिभाषा की जा सके । फिर भी इसकी किताबो के अंदर बहुत सी इधर अधर की बातो की झुरमुट मे कुछ ऐसी बाते भी पाई जाती है जिन्हे देखकर विश्वास से कहा जा सकता है कि यह या तो स्वयं ईश्वरीय वह्य है या नबियों की शिक्षाओं से प्राप्त और इन्ही पर आधारित है । इन्ही मे से एक ऐसे नराशंस के इस संसार मे जन्म लेने की भविष्यवाणी है जो सारे मानव जाति का उद्धार करेगा, और जब वह इस संसार मे जन्म ले तो सभी को उसकी पैरवी (अनुसरण) करने की सलाह भी इसके साथ साथ मौजूद है । ये आश्चर्य जनक किन्तु एकदम सत्य है कि हमारे नबी मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम का जीवन और उसमें घटित घटनाओ का इस नराशंस से इतना अधिक साम्य है कि दिमाग कहता है कि हो न हो वो मानव समाज का उद्धार कर्ता मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के अलावा कोई और हो ही नही सकता क्योकि उसमें आश्चर्यजनक रूप से आपके नाम के साथ साथ आपके जीवन मे घटित घटनाओं का स्पष्ट उल्लेख मौजूद है और ये भी आश्चर्यजनक रूप से सत्य है कि ये भविष्यवाणियां मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के जन्म से सैकड़ो वर्ष पूर्व से इनका उल्लेख इन वेदा और पुराणो मे पाया जाता है ।

नराशंस और उसकी विशेषताएं

हिन्दु धर्म की सबसे मशहूर और प्रथम किताब वेद है । वेद चार है जो क्रमश: ये है :– 1. ऋग्वेद 2. यजुरवेद 3. सामवेद 4. अथर वेद । इन वेदो और खासकर ऋग्वेद का अंदाज़ यह है कि वह किस मुकद्दस व्यक्ति देवता और कभी कभी इंसान को चयन करके उसे एक या कुछ बार सम्बोधित या जिक्र करती है, उसके गुण और खुबियां बयान करती है और कभी कभी कष्ट व मुश्किलात के निवारण के लिए उसे पुकारती भी है । यह जिक्र व खिताब कभी लंबा और मंत्रो के पूरे संग्रह पर आधारित होता है और कभी संक्षिप्त होता है और एक दो मंत्र पर खत्म हो जाता है । फिर कोई और बयान शुरू हो जाता है । नराशंस का जिक्र चारो वेदो मे है । लेकिन सबसे विस्तृत जिक्र अथर वेद मे है । अत: सबसे पहले यही प्रस्तुत है – अथर वेद, काण्ड 20, सुक्त 127, मंत्र 1–14 पर आधारित है । मगर हम यह लेख बहुत लंबा न हो जाए इस वजह से सिर्फ 4 मंत्र ही उच्चारित करते है और उसकी व्याख्या करते है :–

इदं बना उप श्रुत नराशंस स्तरिप्यते ।
पष्टि सहसा नवति च कौरम आ वशमेषु दङ्गहे ।। 1 ।।
डप्ट्रा यस्य प्रवाहिणी वधूमन्ती द्विर्दर्श ।
वर्घा रयस्य नि निहीपत्ते दिव ईपयाण उपस्पृश: ।। 2 ।।
एप ऋंषये गामहे शतं निष्कान दश सज: ।
त्रीणी शतान्यर्दतां सहसा दश गोनाम् ।। 3 ।।

वच्यस्च रेम वच्सस्च वृक्षे न पक्वे शकुन: ।
ओष्टे जिह्वा चर्चरीति क्षुंरी न भुरिजीरिव ।। 4 ।।

पहला मंत्र और उसकी व्याख्या :-

''लोगो आदर पूर्वक सुनो । नराशंसा की प्रशंसा की जाएगी । हम उस मुहाजिर या शान्ति के ध्वजावाहक को साठ हज़ार नब्बे दुश्मनों के बीच महफ़ुज़ रखेगे ।''

नराशंसा संस्कृत का शब्द है जो असल मे दो शब्दो से मिलकर बना है । एक शब्द ''नर'' जिसका अर्थ है इंसान । इसको लाकर यह बताना वेद की दुसरी हस्ती की तरह देवता (फ़रिश्ता या जिन्न) नहीं है ।

दुसरा शब्द ''नराशंस'' है । इसका मतलब है ''वह व्यक्ति जिसकी अधिकता से प्रशंसा की जाए'' अत: नराशंस का ठीक वही अर्थ हुआ जो अरबी शब्द ''मुहम्मद'' का है । दोनो मे इसके सिवा कोई फ़र्क नहीं कि ''मुहम्मद'' अरबी का शब्द है और ''नराशंस'' संस्कृत का । आगे नराशंस की प्रशंसा की जाएगी ।

मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की जितनी प्रशंसा की गई इसका अंदाज़ा लगाना कठिन है । आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की जीवनी और प्रशंसा मे लिखी गई किताबे कितनी है इसका अंदाज़ा करना संभव नहीं । मुसलमान तो मुसलमान विभिन्न धर्मो के गैर मुस्लिम विद्वानो मे भी आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्रशंसा मे इतना कुछ लिखा है कि स्वयं अपने दीन व धर्म के नबी के बारे मे इसका थोड़ा सा हिस्सा भी नहीं लिखा । बल्कि उनके पास ज्यादा कुछ लिखने के लिए है ही नहीं । मुसा अलैहिस्सलाम से उनके उपकारो के बावजूद यहूदियों को हमेशा शिकायत ही रही है । ईसाईयों के पास ईसा अलैहिस्सलाम के कुछ चमत्कार कुछ मिसाले कुछ कड़वे बयानात, सलीब पर चढ़ने और आसमान पर जाने की भ्रमित घटनाओ के सिवा कुछ नहीं । बल्कि माईकल हर्ट नामक एक ईसाई विद्वान ने अभी तक दुनिया मे पैदा हुए 100 महान व्यक्तियों के बारे मे एक किताब लिखी जिसमे उसने पाया कि मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ही एकमात्र ऐसे है जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र पारिवारिक,सामाजिक, धार्मिक मे इतने अधिक सफल हुए कि माइकल हर्ट को अपनी किताब मे उनका उल्लेख सर्वप्रथम स्थान देकर करना पड़ा और उन्होने लिखा कि मुहम्मद साहब की शिक्षाएं आज के युग मे भी उतनी की कारगार है जितनी आज से 1400 वर्ष पुर्व थी, साथ ही उनका असर इतने वर्ष बीत जाने के बाद भी आज भी मानव समाज मे देखा जा सकता है । और माईकल हर्ट ने ईसा अलैहिस्सलाम को अपनी इस किताब मे तीसरा स्थान दिया और साथ ही इस्लाम के दुसरे खलीफा हज़रत उमर बिन खत्ताब रजिअल्लाह अन्हू को उसने 54 वां स्थान देकर सम्मानित किया । साथ ही श्लोक से ज़ाहिर है कि ये आप मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के जन्म से बहुत पहले का है ।

इसके बाद वाले श्लोक के हिस्से मे नराशंस को कोरम कहा गया है । शब्द कोरम के दो अर्थ है । एक ''मुहाजिर'' दुसरे ''शान्ति का ध्वजावाहक'' । इनमे से दोनो अर्थ ही सबसे ज्यादा मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ही फिट बैठते है । आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का से मदीना हिजरत (पलायन करना, मक्का वासियो के जुल्म से परेशान होकर पलायन करने को हिजरत कहते है जिसके बाद हिजरी सन् की शुरूआत मानी जाती है, हिजरत करने वाले को मुहाजिर कहा जाता है) की, और हिजरत की यह घटना नबीयों के इतिहास

की सबसे मशहूर घटना है ।

आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ही शान्ति के ध्वजावाहक थे । इसका अंदाज़ा इससे किया जा सकता है कि आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के आगमन के समय मदीना मे जहां आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हिजरत की थी, औस व ख़ज़रज नामक दो कबीलो के बीच सौ साल से रह रहकर लड़ाई चली आ रही थी । पूर्वी अरब मे बक्र व तगलब के बीच चालीस साल से लड़ाई चली आ रही थी । जिसमे दोनो के सत्तर हज़ार आदमी मारे जा चुके थे । बीच अरब मे अबस व जुबयान के बीच तहलका मचा हुआ था । यमन के यहूदी शासको ने नजरान के ईसाई बाशिन्दों को जिन्दा जला डाला था । जवाब मे हब्श के ईसाइयों ने यमन पर कब्ज़ा करके वहां की ईट से ईट बजा दी थी । फिर काबा भी ढाना चाहा तो अल्लाह के अज़ाब ने उनकी कमर तोड़ दी । इससे फायदा उठाकर यमन पर फारसी चढ़ आए । हर तरफ जंग व मारकाट का तुफान मौजूद था । कबाइल अपने आवास ग्रहों मे क़ैद थे । फिर भी हमलावरों से महफूज न थे । मकानो से बाहर निकलना मानो मौत को दावत देना था । केवल धार्मिक हुरमत के चार महीने उनके लिए शान्तिपूर्ण थे और उन महीनो मे वह अपने दायरे से बाहर आना जाना कर सकते थे । लेकिन इस थोड़ी से मुद्दत के लिए भी जंग से अलग रहना उनके लिए मुश्किल हो जाता था और वह कुछ महीनो को आगे पीछे करके उस दौरान भी जंग का मौका निकाल लेते थे ।

इस भयंकर तुफान के मौके पर आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की दावत (ईश्वर का संदेश) ज़ाहिर हुई । लोग आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम से भी वहशी अंदाज़ मे पेश आए । लेकिन आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बड़े सब्र और शांति के साथ इसका जवाब दिया । और एक अदभुत घटना ने जन्म लिया पुरा अरब केवल 8 साल की मुद्दत मे अमन और शांति का गढ़ बन गया, वह जो सैकड़ा सालो से एक दुसरे की जान के प्यासे थे इस तरह भाई–भाई हो गये कि हर एक दुसरे पर अपनी जान देना गर्व की बात समझने लगा । जहां काफिले राह चलते हुए लुट लिये जाते थे उसी अरब मे एक औरत मक्का से सैकड़ा मील दुर हीरा से चलकर मक्का अकेले चली आती और कोई तिरछी नज़र उठाकर देखने वाला न होता । यह मानव इतिहास की एकमात्र शांति कायम होने की अदभुत घटना है । मतलब यह कि अंबिया के पूरे इतिहास मे शान्ति कायम करने का यह कारनामा मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के अलावा किसी ने अंजाम नही दिया ।

इस मंत्र के आखिरी श्लोक मे यह भी कहा गया है कि अल्लाह आपके दुश्मनो के बीच जिनकी संख्या साठ हज़ार नब्बे होगी, आपकी हिफाज़त करेगा ।

इसमे दुश्मन की संख्या का निर्धारण अत्यन्त बारीकी के साथ किया गया है और इस बिना पर यह बड़ी महान और हैरतनाक भविष्यवाणी है । दुश्मन से तात्पर्य वह सैनिक है जो तलवार लेकर आपके मुकाबिल आए या जिन्होने खुफिया तरीके से आपको कत्ल करने की कोशिश की क्योकि उन्ही से आपकी जान को खतरा था । अत: उन्ही से आपकी हिफाजत की तरफ इशारा है । बड़ी हैरत से सुनिए कि इस किस्म के आपके दुश्मनो की संख्या ठीक साठ हज़ार नब्बे थी । कुरैशी और उनके साथ बनु गितफान और शुरका कुल दस हज़ार थे । जो जंग खदक मे इकट्ठे आए थे और दूसरी जंगो मे छोटी छोटी टोलियों के अंदर, इसी तरह यहूद के विभिन्न कबाइल के सैनिको की संख्या दस हज़ार थी जो खैबर मे लगभग एक साथ लड़े और बाकी जंगो मे अलग अलग । रूमी जिन्होने मदीना पर धावा बोलकर उसकी ईट से ईट बजानी चाही और जिनसे मुकाबले के लिए रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि तबूक तशरीफ ले गए तो वो सामने न आए, उनकी संख्या 40 हज़ार थी कुल दुश्मन हुए साठ हज़ार । कपटी जिन्हे

मुनाफिक कहा जाता है जिन्होने तबुक मे आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ जाने से इंकार कर दिया वो 80 थे और जो तबूक मे गए वह 13 थे। उन्होने वापसी मे आपको कत्ल करने का भी इरादा भी किया लेकिन नाकाम रहे। उनमे से तीन ने कपट से तौबा कर ली और सच्चे पक्के पैरूकार बन गए। दस कपट पर बाकी रहे इस तरह कुल संख्या ठीक 60 हज़ार 90 होती है, जिनके बीच अल्लाह ने आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिफाज़त की।

नोट :- मंत्र के इस हिस्से मे शब्द रोशम इस्तेमाल हुआ है। यह जहां दुश्मनी के अर्थ मे इस्तेमाल होता है वही जज़ीरतुल अरब के बाशिन्दो पर भी बोला जाता है। यहां अगर यह दुसरा अर्थ लिया जाए तो इस बात का निर्धारण हो जाता है कि नराशंस पैगम्बर का संबंध जज़ीरतुल अरब से होगा और मालुम है कि जज़ीरतुल अरब से केवल मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ही नबी बनाए गए है।

दुसरा मंत्र और उसकी व्याख्या

''उसकी सवारी ऊंट होगी और उसकी बारह पत्नियां होगी। उसका दर्जा इतना बुलन्द और उसकी सवारी इतनी तेज़ होगी कि वह आसमान को छुऐगी फिर उतर आएगी।''

इस श्लोक ने स्पष्ट कर दिया की ऊंट की सवारी सिवाए रेगिस्तानी ईलाको के और कही नही कि जा सकती है और अरब मे ही इसका इस्तेमाल कसरत से होता है और होता था और मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की स्थायी सवारी भी ऊंट ही थे।

वह तजर्रूद (ब्रम्हाचार्य) की जिन्दगी गुज़ारने वाला ब्रहमाचारी न होना बल्कि शादी करेगा और शादी भी एक नही बल्कि बारह औरतो से और यह बात भी ठीक ठीक मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम पर सही आती है। आपकी कुल 11 पत्नियां और एक लौंडी कुल 12 स्त्रियां आपकी सेवा मे रही। जबकि आपके सिवा किसी और नबी की पत्नियों की यह संख्या न हुई। उनके नाम इस तरह है :- 1. सैय्यदा हज़रत खदीजा बिन्ते खुवेल्द रजि0 2. सैय्यदा सौदा बिन्ते जमआ रजि0 3. सैय्यदा हफसा बिन्ते उमर रजि0 4. सैय्यदा आयशा बिन्ते अबूबक्र रजि0 5. सैय्यदा जैनब बिन्ते खुज़ैमा रजि0 6. सैय्यदा उम्मे सलमा बिन्ते अबी उमैया रजि0 7. सैय्यदा जैनब बिन्ते जहश रजि0 8. सैय्यदा जुवैरिया बिन्ते हारिस रजि0 9. सैय्यदा उम्मे हबीबा बिन अबी सुफियान रजि0 10. सैय्यदा सफिया बिन्ते हय्य बिन अखतब रजि0 11. सैय्यदा मैमूना बिन्ते हारिस0 रजि0 और 12. हज़रत मारिया किबतिया रजि0 (ये आपकी लौंडी थी जिनसे आपके एक साहबजादे हज़रत इब्राहिम पैदा हुए और जिनका दुध पीने के ही ज़माने मे इन्तेकाल हो गया)

नोट :- इस मंत्र के पहले श्लोक के दूसरे वाक्य के अनुवाद मे थोड़ा सा मतभेद है। संस्कृत के मशहूर भारतीय विद्वान पंडित ''वेद प्रकाश उपाध्याय'' ने अपनी किताब नराशंस और अंतिम ऋषि पृष्ठ 14 में वही अनुवाद किया है जो पीछे गुज़र चुका है। लेकिन कुछ दूसरे विद्वान कहते हैं कि यहां वेद की प्रतियों मे मतभेद है। आम प्रतियों मे द्विर्दर्श (दौर दर्श) है। और इस प्रति के अनुसार यह अर्थ किया गया है कि ''उसकी पत्नियां होंगी और उनकी सवारी के लिए दो खूबसूरत ऊंटनियां होंगी। अगर यह अर्थ लिया जाता है तो आश्चर्य के साथ कहना पड़ता है कि

यह भी आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ही फिट आता है । आपके पास सवारी के लिए दो खुबसूरत ऊंटनियां थी । एक का नाम क़सवा और दूसरी का नाम अज़बा था ।

कुछ ने ''दूर देश का अर्थ किया ''डबल दस'' अर्थात 20 और अनुवाद यूं किया है ''उसके पास 20 ऊंटनियां होंगी जिन पर वह स्वयं सवार होगा और अपनी पत्नियों को भी सवार करेगा । अब यह भी अजीब बात है कि नबी सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की मिल्कियत मे कुल 20 ऊंटनियां थी । 2 सवारी के लिए खास थी । बाकी से दूध हासिल किया जाता था । लेकिन जरूरत के समय वह सवारी के लिए भी इस्तेमाल की जाती थी खासकर सफर के दौरान आप पत्नियों को उन पर सवार फरमाते थे । यहां यह भी याद रखने योग्य है कि मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की पतिन्यों के अलावा किसी और नबी की पत्नी या पत्नियों ने ऊंट की सवारी नहीं की ।

अब आईये देखते है इस मंत्र के दुसरे हिस्से मे जिसमे कहां गया है कि उसकी सवारी इतनी तेज़ होगी की वह आसमान को छुएगी और उतर आएगी ।

यह बात मानव इतिहास की सबसे आश्चर्यजनक घटना है जो सिर्फ और सिर्फ मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ ही हुई फरिश्ता एक अजीब किस्म के जानवर के साथ जो कि घोड़े से छोटा और गधे से बड़ा था जिसे बुराक कहा जाता है, के साथ आपकी सेवा मे आया जिसकी रफ्तार इतनी तेज़ थी कि जहां तक इंसान की नज़र जाती है वह पलक झपकते पहुच जाती थी । उस पर सवार होकर आपको आसमानो की सैर कराई गई फिर मक्का मे ला उतारा । यह अजीबोगरीब घटना सिर्फ और सिर्फ मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ पेश आई जिसका कुरआन मे यूं जिक्र किया गया है :-

''पाक है वो अल्लाह जिसने अपने बंदे (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को रात ही रात मे मस्जिद हराम (यानि खानाएं काबा मक्का) से मस्जिद अक्सा (यरुशलम) तक ले गया जिस के आस पास हम ने बरकत दे रखी है इसलिये कि हम उसे अपनी कुदरत के बाज़ नमूने दिखाये यकीकनन अल्लाह खुब सुनने देखने वाला है''(सुरह बनी इस्राईल आयत 1)

तीसरा मंत्र और उसकी व्याख्या

''उसने मामह ऋषि को सौ अशरफियां, दस हार, तीन सौ घोड़े और दस हज़ार गायें प्रदान की ।

नराशंस को पहचानने के लिए यह भी बड़ा अहम और फैसला कुन मंत्र है । इसमे इसको ''मामह ऋषि'' कहा गया है । यह नाम ऋग्वेद मंडल 5 सूक्त 27 मंत्र 1 मे भी आया है । इसके बारे मे दो संभावना है एक यह कि यह अरबी भाषा के शब्द ''मुहम्मद'' का संस्कृत उच्चारण हो । अर्थात अरबी ज़बान का शब्द मुहम्मद संस्कृत ज़बान मे जाकर शब्द मामह बन गया हो । याद रहे कि दो ज़बानों मे एक ही शब्द के उच्चारण मे इतना फर्क आश्चर्यजनक नहीं । अरबी का यह्या, इबरानी मे यूहन्ना और यूहस कहलाता है । इलियास को इलिया और यूनुस को यूनाह और यूनान कहा जाता है आदि ।

इसके बाद इस मंत्र मे में बताया गया है कि अल्लाह उस ऋषि (पैगम्बर) को सौ नशक (अशरफिया) प्रदान करेगा । नशक ख़ालिस सोने के सिक्के को कहते हैं जो आग मे तपाकर ढाला जाता है शतपथ ब्राहम्मण, कांड 12, प्रपाठक 9, ब्रहम्मण एक में है कि सोना इंसान मे रूहानी कुव्वत के लिए संकेत है । ''अत: इससे तात्पर्य उस पैगम्बर के ऐसे सौ साथी है जो आज़माइश की आग मे तपकर बिल्कुल खरे साबित हुए हो । इससे इशारा मुहाजिरीन हब्शा की तरफ है । जिन्हे मुशिरिकीन मक्का ने ऐसी शदीद आज़माईशो मे डाला था जिन्हे सुनकर रौंगटे खड़े हो जाते है । मगर वे इतने खरे साबित हुए कि बाल बराबर भी दीन व ईमान से न हटे । फिर देखो यह कैसी अजीब समानता है कि उन मुहाजिरीन हब्शा की कुल संख्या एक सौ एक थी । जिनमे से एक व्यक्ति उबैदुल्लाह बिन जहश हब्शा पहुंचने के बाद मुर्तद होकर ईसाई हो गया और मर गया । बाकी सौ लोग दीन इस्लाम पर निहायत सख्ती से कायम रहे । अत: यह मानना पड़ा कि इस मंत्र मे 100 अशरफियों से तात्पर्य यही अज़ीम लोग है ।

फिर कहा गया है कि अल्लाह ने उसको दस हार अता किए । हार सबसे ब़ढिया ज़ेवर होता है जो गले का माल, सीने से निकट, दिल से लगा हुआ और देखने वालो की नज़र मे सबसे खूबसूरत और बेहतर होता है । अत: इससे इशारा है कि उस रसूल को दस ऐसे साथी प्रदान किए जाएंगे जो अपनी खूबियों मे सबसे प्रमुख और खुद रसुल की नज़र मे सबसे अच्छें और महबूब होगें । और याद रहे कि मुहम्मद रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि के ही ऐसे दस साथी हुए जिन्हे आपने नाम ले लेकर जन्नत (स्वर्ग) की खुशखबरी सुनाई जिन्हे अरबी ज़बान मे ''अशरा मुब्बशरा'' कहा जाता है । उनके नाम ये है :– 1. अबुबक्र सिद्दीक रजि0 2. उमर बिन खत्ताब रजि0 3. उस्मान बिन अफ्फान रजि0 4. अली बिन अबु तालिब रजि0 5. तल्हा बिन उबैदुल्लाह रजि0 6. सईद बिन जैद रजि0 7. सॉद बिन अबी वक्कास रजि0 8. अब्दुर्रहमान बिन औफ रजि0 9.जुबैर बिन अव्वाम रजि0 10. अबु उबैदा बिन जर्राह रजि0 ।

मतलब यह कि ये दस हज़रात अपने इस खुसुसियत की वजह से इतने मशहूर हुए कि आज तक पूरी उम्मत उनकी रहनुमाई की कोशिश करती है । और उनका जिक्र करती चली आ रही है ।

''उसके बाद इस मंत्र मे कहा गया है कि अल्लाह ने उस रसुल को तीन सौ तेज़ रफ्तार घोड़े प्रदान किए ।'' घोड़ो के लिए शब्द ''अरून'' इस्तेमाल किया गया है । अरून उन तेज़ दौड़ने वाले घोड़ो को कहा जाता है जिसे आर्य नहीं बल्कि दूसरी कौमें खासकर अरब इस्तेमाल करते है । इससे नतीजा निकलता है कि यहां जिस पैगम्बर की भविष्यवाणी की जा रही है वह हिन्दुस्तान में नहीं बल्कि कही और खासकर अरब का होगा ।

घोड़े का शब्द बहादुरी और जवांमर्दी की अलामत है । मुराद यह है कि उस पैगम्बर को तीन सौ जवांमर्द बहादुर प्रदान किए जाएंगे जो मैदाने जंग मे लड़ाई और सुरक्षा मे एक प्रमुख शान रखेगें । इससे इशारा इस्लाम की पहली मशहूर जंग जिसे गजवा–ए–बद्र कहा जाता है कि तरफ है । उनकी संख्या तीन सौ तेरह या तीन सौ चौदह थी । उन्होने लगभग निहत्थे 1000 हज़ार की हथियारो से लैस फौज़ से टक्कर ली थी और आश्चर्यजनक रूप से सफल हुए थे । उन्होने दुश्मन फौज के 70 को मारा और 70 को ही गिरफ्तार भी कर लिया । और इस जंग मे इस बहादुर फौज के 14 साथी शहीद हो गए । अत: कुल 300 बाकी रहे जो तकरीबन बाद की हर जंग मे मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ शामिल रहे । इसलिए इस मंत्र मे 300 की संख्या बताई गई है ।

आखिरी बात इस मंत्र मे यह कही गई है कि उस पैगम्बर को दस हज़ार गाएं प्रदान की गई । याद रहे सीधे और शरीफ जो हर तरह की चालबाजियों से दूर रहता है ऐसे व्यक्ति को आज भी ''गाय'' की संज्ञा दी जाती है ।

अत: मंत्र के इस हिस्से का तात्पर्य यकीकन ऐसे 10000 लोगों की तरफ है जो बिल्कुल छलकपट से दूर हो । और आप हैरानी से पढ़िये की फतह मक्का के मौके पर ऐसे ही 10000 लोग ने आप मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मिलकर मक्का शहर को फतह किया । और मानव इतिहास की एकमात्र अजीबो गरीब घटना को अंजाम दिया, वो ऐसे की पूरी मानव जाति जानती है कि जब कोई मुल्क या शहर फतह किया जाता है जो जीतने वाली फौज के कमांडर और आम सिपाही बड़ी बेरहमी से हारी हुई फौज के शहर पर जुल्म करते है औरतो की इज्जत रेज़ी की जाती है यहां तक कि बेगुनाह बच्चो बुढ़ो और जवानो को कत्ल कर दिया जाता है । और सारा कीमती सामान लुट लिया जाता है ।

मगर मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सारे मक्का को आम माफी का एलान कर दिया और उनके सिपाही बड़ी सादगी से शहर मे दाखिल हुए और किसी औरत की इज्जत तो दूर की बात है किसी से एक दीनार भी नही छीना गया, और इस फौज के कमांडर यानि मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने ऊंट पर इस कदर सिर झुकायें हुए दाखिल हुए कि आपकी दाढ़ी मुबारक आपके ऊंट की पीठ से छु रही थी । जबकि यह वहीं शहर था जिसने आप पर इतने आत्याचार किए जिसकी मिसाल आज तक नहीं मिलती । और उस शहर के साथ आपने जो बर्ताव किया मेरा दावा है मानव जाति अपने इतिहास और भविष्य में फिर ऐसा बर्ताव कभी नहीं देखेगी ।

चौथा मंत्र और उसकी व्याख्या

''तब्लीग कर ऐ अहमद । तब्लीग कर । जैसे चिड़िया पके हुए फल वाले पेड़ पर चहचहाती है तेरी ज़बान और दोनो होंठ कैंची के दोनों फलो की तरह चलते है । ''

इस मंत्र मे रीभ नाम का एक इंसान मुखातिब है संस्कृत मे रीभ का ठीक वहीं अथ है जो अरबी मे अहमद का है । अर्थात अधिकता से या सबसे बढ़कर अल्लाह की प्रशंसा एवं स्तुति करने वाला ।

फिर इस रीभ अर्थात अहमद (मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम) को प्रचार का हुक्म देते हुए प्रचार के उस अमल को फलदार पेड़ पर चिड़ियो के चहचहाने से उपमा दी गई है । चिड़ियों की चहचहाहट बड़ी सुहानी और मिठास लिए हुए होती है । इधर दीन इस्लाम की तब्लीग की बुनियाद कुरआन मजीद की तिलावत है । और मालुम है कि कुरआन की तिलावत अपने अंदर वह सौंदर्य आकर्षण और सुहानी कशिश रखती है कि अगर कोई अच्छी आवाज़ वाला क़ारी तिलावत शुरू कर दे तो पूरी कायनात दम सादे सुनने को खामोश हो जाती है । अर्थात धर्मो के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में जब भी कुरआन की तिलावत शुरू हुई तो किसी को सहन न हुआ । बिला भेदभाव धर्म व दीन और बिला भेदभाव ज़बान व शब्दकोष हर एक के चेहरे आंसुओं से तर बतर हो गए । इसलिए तब्लीग इस्लाम के अमल को चिड़िया की चहचहाट से जो उपमा दी गई है, वह निहायत ही शानदार, सम्पूर्ण और अच्छी उपमा है । फिर चिड़ियां अपनी चहचहाहट के दौरान मग्न होती है । नबी सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम भी अपनी तब्लीग के दौरान अत्यन्त मीठे होते थे । आपकी नज़र मे इससे ज्यादा आनन्दमय कोई काम था ही नहीं । इसलिए इस राह मे आपको जान की भी परवाह न थी ।

यहां यह जिक्र भी बेजा न होगा कि खुद कुरआन मजीद के अंदर भी कलिमा इस्लाम को एक फलदार पेड़ से उपमा दी गई है । इरशाद है :-

''तुम देखते नहीं कि अल्लाह ने किस तरह कलिमा तय्यिबा की मिसाल उस पकीज़ा पेड़ से बयान की है जिसकी जड़ साबुत है और जिसकी शाख आसमान मे है । जो अपने रब के हुक्म से अपना फल हर वक्त देता रहता है और अल्लाह लोगों के लिए मिसाले बयान करता है ताकि वे नसीहत पकड़े ।''(सुरह इब्राहिम 24-25)

इस मंत्र के दुसरे श्लोक मे कहा गया है कि तेरी ज़बान और दोनो होंठ कैंची के दो फलों की तरह चलते है । इसमे आपकी ज़बान से अदा होने वाले कलाम की किस्म बताई गई है । कैंची चलती है तो कपड़े को काटती और दो टूक करती जाती है । इसलिए मतलब यह हुआ कि आपका कलाम दो टूक होगा । उसमें किस तरह का संकोच और भ्रम न होगा । और आपके मुंह से अदा होने वाले कलाम की ठीक यही किस्म थी । कुरआन स्वयं मे दो टूक और सत्य व असत्य के लिए ज्ञान है । और कुरआन के अलावा भी जो कुछ आपने फरमाया वह उसी तरह दो टूक था । और आपकी हर बात सुबह की तरह साफ और रौशन थी ।

चुंकि इस पवित्र अथरवेद के इस संबंधित काण्ड मे के इस अध्याय मे कुल 14 मंत्र है जो नराशंस की भविष्यवाणी पर आधारित है जिसमे से हमने जगह की कमी की वजह से सिर्फ 4 मंत्र की ही वयाख्या की है ।

इसी तरह हिन्दु धर्म की पवित्र किताबो मे एक कल्कि अवतार (रसुल, देवदूत) के आने की भी भविष्यवाणी है । और पवित्र किताबो मे उस रसुल के बारे मे जो भविष्यवाणियां की गई है उसे संक्षेप मे प्रस्तुत किया जा रहा है क्योकि ये लेख अनुमति से ज्यादा लंबा हो गया है इसलिए संक्षेप मे प्रस्तुत कर रहे है :-

कल्कि अवतार के पिता और मां का नाम

''सुमत्यां विष्णुयशसा गर्भमाधत्त वैष्णवम् ।''

(कल्कि पुराण, अध्याय 2, श्लोक 11)

अर्थात कल्कि अवतार ''सोमती'' नामक स्त्री से पैदा होगा और उसके पिता का नाम ''विष्णु'' होगा । यहां सोमती का अरबी मे शाब्दिक अनुवाद ''आमना'' है और विष्णु का अनुवाद ''अब्दुल्लाह' है । और पुरा संसार जानता है कि आप मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के माता पिता का नाम यही है ।

जन्म स्थली और खानदान

शम्भलग्राममुख्यस्य ब्राह्यमणस्य महात्मन: ।

भवने विष्णुयशस: कल्कि: प्रादुर्भविष्यति ।।

(भागवत पुराण 12/2/18)

अर्थात कल्कि अवतार शम्बल ग्राम मे विष्णु के यहां उनके ब्रहमण महन्त के घर पैदा होगा । अब आश्चर्य से सुनिये शम्भल ग्राम का मतलब है अमन वाला नगर और मक्का को अमन वाला नगर ही कहा जाता है खुद कुरआन ने मक्का को अमन वाला शहर ही कहा है । और ब्रहमण महन्त से मतलब दीनी पेशवा के है और मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम हाशिमी परिवार से थे और उनके दादा अब्दुल मुत्तलिब नगर के पेशवा ही थे ।

जन्म तिथि

द्वादश्यां शुक्लपक्षस्य माधवे माधवे मासि माधवम्: ।
जातो ददृशतु: पुत्रं पितरौ हृष्टमानसौ ।।
(कल्कि पुराण, द्वितीय अध्याय, 15 वां श्लोक)

अर्थात कल्कि अवतार बैसाख महीने की 12 तारीख को पैदा होगा और सातवी सदी होगी ।

बैसाख हिन्दी का मशहूर महीना है जो अब भी हिन्दी केलेंडर मे इसी नाम से लिखा जाता है । हिन्दी कैलेन्डर के अनुसार नबी करीम मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम 12 बैसाख 628 वि0 को पैदा हुए । और कैलेन्डर के अनुसार यह अत्यंत पवित्र दिन था । और पीछे गुजर चुका है कि मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसी दिनांक को जन्म लिया था, और सातवी सदी मे किसी अन्य रसुल के अवतरित होने का हमे ज्ञान नहीं है ।

इनके साथ साथ ही इन्ही पुराणो मे और भी ठेर सारी भविष्यवाणियां आखरी रसुल मुहम्मद सल्लाल्लाहु पर हुबहु मेल खाती है मगर स्थान की कमी की वजह से हम उसपर चर्चा नहीं कर पा रहे है । आगे किसी अंक मे अगर गहन अध्ययन मे रूचि रखने वालो ने अनुमति दी तो उन भविष्यवाणियां पर भी चर्चा की जाएगी ।

इन पवित्र पुराणो से पता चलता है कि हमारे हिन्दु भाई और विद्वान जिस नराशंस और कल्कि अवतार की प्रतिक्षा कर रहे है, इतनी स्पष्ट भविष्यवाणियां मौजुद होने के बाद भी उसे समझ क्यो नहीं सके, और ऐसा भी नहीं है किसी विद्वान ने उन्हे पहचानता नहीं ऐसे बहुत से उदाहरण है कि हिन्दु विद्वानो ने उन्हे पहचाना और उनकी पैरवी भी की, और ये सिलसिला अनवरत जारी रहेगा, और धीरे धीरे हमारे बीच की धार्मिक वैमनस्यता कम होती जाएगी ऐसी ही उस अल्लाह से दुआ है कि वो मानव जाति को हक को पहचानने और उस पर अमल करने की शक्ति प्रदान करे । आमीन ।।

अर्थात नराशंस और कल्कि अवतार जिसे मानव जाति के उद्धार के लिए इस धरती पर इन वेदो के अनुसार जन्म लेना था उस अवतार ने आज से चौदह सौ सत्यासी वर्ष पूर्व अरब के मक्का शहर मे आखिरी रसुल के रूप मे मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाम से जन्म ले लिया और सफलता पूर्वक ईश्वरीय आदेश मानव जाति को बता कर, और इंसान को इंसानियत सिखा कर, दिनांक 12 रबीउल अव्वल 11 हिजरी बमुताबिक 24 अप्रैल सन् 634 ईसवी दिन सोमवार को 63 वर्ष 3 दिन की उम्र इस संसार मे गुजार कर सुबह सबेरे इस दुनिया से रूखसत होकर अपने पालनहार यानि अल्लाह से जा मिला । इन्नल लाहा व इन्ना अलैहि राजेऊन ।

काज़ी अदनान अहमद (इमरान)
दि आप्टिका, मदरसा रोड,
बैजनाथपारा, रायपुर छ0ग0

CONTACT

ISLAMIC DAWAH CENTER
RAIPUR
QAZI ADNAN AHMED
9009911122
WWW.FACEBOOK.COM/IDCRAIPUR